

लसताने ॥ २ ॥ अविनल यद्धि न विराज मोहन सुन्दर हंस ग्यानं
॥ जंभूलि साकुलि जोस्पदि लाद्धि न अभय वर विया द्दीनं ॥ नदि
भंदि पालदुः काल सन्या व गथि ड भावनं ॥ ३ ॥ जक्ष किं न नाग
मुनि नर सिद्धि गन पाई श्वरं ॥ वला विष्णु शं भई नु न देव पनि से
न पूजा पालितं ॥ वान जिने केवल मन ते पालित भजन भावनं

॥४॥ मते ले ईश्वरी तेलवे विये छिन थुगु लि लोक समधाने

॥५॥ ईनी श्री सादवी सो स्री सपाष भम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्री सादेवी वागवादी नी निमो ॥ भजा जयापें गुलि हनु तु नंदिता
पें गुलि वेद बखान दि गु हा ता ॥ अथे ननु सकल्प दये के कता
॥ मती गती सुदती ही सर स्वती ॥५॥ हरि जया ते वर की न

जांवीला ॥ गद्दया हसचे स ग पा जु ला ॥ जगत या मन मोह जय
कला ॥ मती गती सुदती हि सर स्वती ॥२॥ शिव जने प्रलय स
हेता जु ला ॥ अदी नहा कय शोध मने जु ला ॥ थस कली हि क पा न
थ का जु ला ॥ मती गती सुदती ही सर स्वती ॥३॥ असुर की चार गु
ह्य के देवता मनु कया मनी नंदि तु नं निता ॥ दि गु ली ते जन न
नु कला किता ॥ मती गती सुदती हि सर स्वती ॥४॥ फूनि क मा ल स

फुली जौ से दिला ॥ भगन या वारं अभू वीला ॥ कन कमानि करत नीला
 तीला ॥ मती गती सुदती छितर स्वती ॥ ५ ॥ इस उफोल गुमान मी खा
 या ता ॥ गमन वान स्वया दिवा हांगा ता ॥ स्वगुलिलोक सजोर मद्यु छिता
 ॥ मती गती सुदती छी सर स्वती ॥ ६ ॥ गावे ले विद्रु मया फल जा सयी
 लुरु सि पाउ पमा ववे ले दयी ॥ छी गुलि ध्यान न जे लजा वस

स्वरिणी श्री अर्चु पुनः हो के
 श्री गुरु गोत्राय नमो ॥ श्री सादो दीन नमो ॥ ॥ पुर्व जन्म सख कर्म
 तो फिरया ॥ गर्भ संजिनी नमाल मा मया ॥ मोह जाल सतु कृति या दिन वि
 वगती हे सर स्वती ॥ १ ॥ बाल वेत सहे ते गूलि जुया ॥ ज्ञान दिन मन जि
 कुसंग या ॥ भाव या ये मफया दिपा लिया ॥ दिन ववगति हे सर स्वती ॥ २ ॥ २ ॥
 काठ नं जि जुल उगव जौ वन ॥ वसु पाइ तल ह्ना मद्रु सन ॥ भाल पे म
 पुजिलो भ मोहन ॥ दिन ववगति हे सर स्वती ॥ ३ ॥ याय तमन जि दल

अर्चने ॥ इष्टुमिव पारिवारजनं ॥ पापेनं मफुद्धिनामचिन्तना ॥
विपगतिहे सरस्वति ॥ ४ ॥ अथ वेत्ताससरि दुखनं ॥ वाढ पित्तकफ
आदि रोगनं ॥ लुटिपुटिमदया स्वभाव न ॥ दिनवीवगती हे सरस्वती
॥ ५ ॥ वल्लविष्णुहरयादिदेवता ॥ दिविना नमदु स्तनमेवता ॥ जो
गठक्तमननं हि दरता ॥ दिनवीवगतिहे सरस्वती ॥ ६ ॥ सहि सिदा

श्री

परमान आयुया ॥ गीतिसधाया तप्ता मन्त्र स्यता ॥ अर्धभागफुत
गोवाहे नूया ॥ दिनवीवगतिहे सरस्वति ॥ ७ ॥ सेखव वी श्वश भावनं वने
आलकल जमराजादुतरां ॥ धर्मयाये मफुया जि नहुनं ॥ दिनवि
गतिहे सरस्वति ॥ ८ ॥ गोहर्ननं पायि ॥ दिउपासना ॥ वयाता हुजम
रा जासासना ॥ वारिदासया ॥ मतीसदीचीना ॥ दिनवि
गतिहे सरस्वति ॥ ९ ॥ इति श्री सारदेवी सौत्र नमः ॥ १० ॥ ॥ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री चण्डेश्वरिण्यो नमः ॥ प्रथम संदाटि वी
नायकनाथ ॥ भो कृपावसिरनेतनाथ ॥ चित्रबुद्धिकारजो
नलपाव ॥ चण्डिका भजलपेजिनभाव ॥ १ ॥ चण्डिका ज
गतयाजुलमाया ॥ ओसयागुग्रायाग्रहिमाया ॥ दोलदि
मुननजामफुहाये ॥ भावनानभतीचाजिनधाया ॥ २ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री चण्डेश्वरिण्यो नमः ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

२१

चण्डदानवहृदस्फेवोना ॥ बाहुदण्डपरचण्डवसाना
॥ कस्तनसिवजुयातपयाता ॥ सीवनुनवरवियेनविज्या
ता ॥ ३ ॥ आवकावहनहुवरफोने ॥ ॥ हनेहे असुरकस्त
नचोना ॥ चन्ददैत्यनमहेस्वरसांना ॥ सौगनायक जुयेव
रफोना ॥ ४ ॥ धनइस्वरसकेवरलाटा ॥ स्वर्गलोकः
श्री गणेशाय नमः ॥

जय पन्ननेचीता ॥ विवीर गरादेत्य अपाल ॥ उनका
बवन धोनह थाल ॥ ५ ॥ देवलोक सपरा जय याता ॥ सि
वजुया वरदवन मफुता ॥ इन्द्र आदि पृथी विवी स्नेत्रना ॥
दैत्य लोक नर नहने लिनायेना ॥ ६ ॥ गुप्त पर्वत वनांतर जला
॥ चाने थास मदया हिला जुला ॥ वेक्ररूप नचोने तुम दाला

॥ पृथी रूप न असम जुला ॥ ७ ॥ इन्द्र आदि सम धार जु या व ॥
॥ वल्लु लोक सम थोये का व ॥ धीनतिया त चतुर्मुख याता ॥
नेकुने जगत या दिवी ठाटा ॥ ८ ॥ देवता स अधिकार समेत ॥ ज
ज्ञ भाग सकलें थोनलात ॥ राज काज सुख भोजन याता ॥
धव थ मंन विव सुजात ॥ ९ ॥ थोने जग विविनं स्तर हाता ॥

थीन पूर्व सत वन पयाता ॥ देव देव पावरं चल लाक ॥ चराड दा
नव गुमान नजे क ॥ १० ॥ थीन स मुख ग गघे जिन धाये ॥ हा
य दुख जिन धाय उयाये ॥ आदि सक्ती परमा हर जाया ॥ ओ
स पा जात या नृर्जनी या ॥ ११ ॥ चर रा स सरं न वा ने नु आव ॥ दु
ख कस्त सकलें फुत कीव ॥ दुख सत्तर ल पाव विओ न ॥ ता
ओ ता हो साधन नमो

रिणी ध्वज ल नाम वरवाना ॥ १२ ॥ मत्प लोक हरथा सनवान
॥ रक्त चराड नवनां तरं धेना ॥ थे स गु प्र गु वथा स सिमास ॥ च
रिड का दव धकं तल आस ॥ १३ ॥ देव लोक दूध चित्र गुयाव ॥
पाय अर्घ मधु पक वियाव ॥ धुप दीप फल पुष्प दयाव ॥ १४ ॥
कृत्य गित रचना दयकाव ॥ आगमा दिव वचन सुतीया ता ॥ मुलमं
त्र पद को जप यात ॥ अपसर गगण वयाव म्पहा ल ॥ दक्ष सेन जय स

१५ ॥ धन न हाहा ॥ भावना न परसन्न भुपाव ॥ चण्डिका वारिषे न विष्णा
ता ॥ चन्द्रा कोती सवे जोती भुपाव ॥ देवतान थना दर्शन लाना ॥ १६ ॥
देवि पाचरन संतु निमाना ॥ पुर्व पावें थन वीनति पाता ॥ दुख पा
प फुत की वन नाम ॥ मेव ता गति मदु द्विविना ॥ १७ ॥ हे सुरन्दु नम
य सुमात ॥ देव लोक मा धनि धन कात ॥ फेर ३ ॥ धन विरावरः
एन ॥ ३ ॥ श्री ननुत अनुर ध्यान ॥ ॥ धन नति नार अका सया

तान वानं ॥ वीना थङ्ग व अति नं रसन मथान ॥ चन्द्रा सुरादि सु
रश कु सभा सथे नी ॥ इन्द्रा दिय थव कु वगु सकल्ये ड. कानं ॥ १८ ॥ ने ड. ने
ड. हित वं जि न काने ॥ हे सुरेन्द्रु मते हे थना वाने ॥ देवी यागु वानं दीन भीड
ईन्द्रु या जय कु यी थया धाया धेन ॥ २० ॥ देवता ज धव्य लेत मचाली ॥ मजी
लोक सल ता वन चाली ॥ रास्व अस्व व ल से न्यु भु ड. व ॥ ७ ॥ धा त वने ताल
जि आव ॥ २१ ॥ देव जे स द वगु सिमा खाना ॥ कप या ड. थन ख ड. न धेना

ता ल वा डा इ ट नै म

श्री गुरु गणेशाय नमः ॥ श्री सा देवी नमो ॥ ॥ ग्या ले माले वयाजी
पुंजाय मल ध्वां ॥ सिल सेने मन मदु थी थि जिउं हं ॥ १ ॥ हल
पोल गना चोनाध काज्या ब्वां ॥ गना मदु हल पोल जिमि मीरवा
की ॥ २ ॥ गुगल संधानि मफु मदु जिमी शां ॥ वान लाक हल
पोल कपोल सं त्वां ॥ ३ ॥ ततं सल हा लाजु कथि दाया थें तं
॥ ३ ॥ वा

॥ हल पोल तोल ता व व ज जिउं ब्वां ॥ ४ ॥ हल पो ल्या पालित
त्यत याजी पुमां ॥ थनी नी स्पं जीमिया तावी या हो का मं ॥ ५ ॥
गना होये मते जिउ पाली को सत या मं ॥ तिं तीं रु या जु या
जी उं ली पत सं ध्वां ॥ ६ ॥ चाव चा क हिला उ या ख या
ख या ब्वां ॥ ब्रवेल सृ ती तले का थं कला मं ॥ ७ ॥ अ

कस शिजले ॥ रुस गुंया दथु या ती धि सजिनं ॥ दोल हि निगुहवा
रचो यादीना ॥ **नती गती शुद्धती दीसर स्वती ॥ १० ॥** वारी
दास थुगली कथनं ॥ काक्या देवताया भाषा तो वंभनी चा दयका
॥ **श्लोक्या पद्मकाया सीढी बुद्धी वीव जीता थनी सार दानेह**
धा संनी न्यायाये मते जी मसया ॥ ज्ञानी न उड्यास ॥ **मती ग**

नित्यदती दीसर स्वती ॥ १२ ॥ इती श्री सारदा देवी स्तोत्र **श्रुत**
श्री गुरुगोत्राये नमः ॥ श्री सारदा देवी नमो ॥ ॥ सदैसा
ददाक्षी नसे पादुकाया ॥ अनेक प्रकार नमस्कार धाया ॥ दको
शास्त्र विद्या विवद्वी ननानं ॥ जिता दिह्य पानं विव बुद्धि शा
नं ॥ १ ॥ **द्विगुलि महात्म समुद्र प्रमाने ॥ अनेकैक विनु**

मफु पारवाने ॥ तरे न्या दिदे वं द्विके म क पाता ॥ मु निव्या
 सजोगी दको या दिमाता ॥ ३ ॥ अती भीम मुनी तु यु फक्ति
 लुध ॥ निखा हि समा म दु बा न लो के ॥ कला च नु मो ह्यी ॥ त्री
 ले स्त्रान हो ध्य ॥ द्विरवा ल्या प्र भा जी पु नि स्पा स त्री थं ॥ ३ ॥
 मु सु रु न के ला प्र भा च नु हे लं ॥ ने पा कुं रा ल स र्य या ते ज
 ॥ ३ ॥ ने सा ॥ ये न मी ॥ ३ ॥ ने सा ॥ ये न मी ॥

गे ली ॥ गले मे दि या मा ल न वी नं त्री ॥ सा फु अ क्ष मा ला
 जो से वे न धा ले ॥ ४ ॥ सदा हं स या ह्मा स द्वि पा ली दी तं ॥ तो
 पु व स्त्र लु पा ति साने क ली ॥ दको लो क या के स्नु तु स द्वि र
 लं ॥ अ थं वा ग बा नी ध कं ना म शि ली ॥ ५ ॥ दको की न रि अ प स
 रा दि लु या सं ॥ हि थं न त्र गी ता दि या ता ह था स ॥ म न्द गा दि वा

कय

की गरी बा प न म

जाधमिसेथालं ॥ निमित्तितिल्लाघावालागादिथालं ॥ ६ ॥ न
निनाहदादिफरकोलोत्रयांतं ॥ कृपापूरीदृष्टिदिलानेकशास्त्र
॥ मफुरहीवरवानंजिनयायमाम ॥ गुलिनवनवाताउलीतोहि
ताम ॥ ७ ॥ शिवाभारतिसारदावागवाशि ॥ जगत्तारणीवि
कुशक्तिभवानी ॥ हिकेभक्तियायेथथेसोत्रताई ॥ वर

च
जालकोटकोपूरीलाई ॥ ८ ॥ नेगुगूदधुहीनताकगमिलीस
॥ कुजेपौचकसोतथाअणुमिसं ॥ थुलीविपुलक्षिसुना
नन्दबोड ॥ जिनासिद्विबीआदिपालेसफोउग ॥ ९ ॥

इती श्रीसारादेवि सोत्र समाप्त शुभ ॥ ॥ ॥
स्य सिताजी सर्वो

श्री सारदा देवी नमो ॥ ॥ सरस्वती नमः सर्वदा सुदृष्टि नं स्वव
 जिता ॥ ॥ आपो लवणी रा जहं स वा नोद्वि नं पाता ॥ मनुष्यो
 स बाल बाल च नु स्वा न ध्यं स्वभा ला ता ॥ हिरव्वा लया प्र भा व
 नं पु री च नु नं वी ता ॥ ॥ सरस्वती नमः सर्वदा सुदृष्टि नं स्वव जि
 ता ॥ ॥ हिरगुलिना मचि न्न ना पाप नं लु कं वी ता ॥ समस्त देव लो

५ ॥ या पु चो म त्पां गु लि रु सु सु सां
 कया म नु क नं तु ती स्थी ता ॥ पे गु ली वे द या म नं अ जा नु न तु ति
 पा ता ॥ ॥ सरस्वती नमः सर्वदा सुदृष्टि नं स्वव जि ता ॥ २ ॥ समस्त लो
 क या स्तु त्वा वा स नं दि न या ता ॥ अ ध्ये न वा ग वा दि नी ति ना
 म नं दि न हु ता ॥ म न र्वा षा ष ग ज प अ र वा द को दि नं क्ता ता ॥ ॥
 स्वति नमः सर्वदा सुदृष्टि नं स्वव जि ता ॥ ३ ॥ ति सा अ ने क किं कि नी न र्घं
 ग ला दि नं ह्या ता ॥ हिरगु क्पा न ना र दा दि नु सु र्दि हा ता ता ॥ अप स र न

२७
 क
 र

स्वर्गलोकमेतन्नेपायेफल्गता ॥ **सर्वस्वतिनसर्वदास्तद्विनि**
स्वर्गजिता ॥ ४ ॥ ह्रिगुलिभक्तिभावनान्त्वह्मननिश्चयसा
ना ॥ वृहन्नतंत्रमंत्रजवसाधनायापफल्गता ॥ संभासचोडता
दित्त्वोक आसन्नजितेपाता ॥ **सर्वस्वतिनसर्वदास्तद्विनि**
स्वर्गजिता ॥ ५ ॥ स्वादिपश्चयादिवर्णजोतिर्नद्विर्नखता ॥ सुगुंथास

आरुनी

विष्णुभ

अरुनी

विष्णुभ

नक्षत्रावली

१. आरुनी

२. मरुति

३. कृत्तिका

४. रोहिणी

५. मृगशीर्षा

६. आर्द्रा

७. पुनर्वसु

८. अश्लेषा

९. मघा

१०. पूर्वफाल्गुनी

१२. उत्तरफाल्गुनी

१३. हस्ता

१४. चित्रा

१५. स्वाति

१६. विसाखा

१७. अनुराधा

१८. ज्येष्ठा

१९. मूल

२०. पुर्वाषाढा

२१. उत्तराषाढा

२२. श्रवणा

२३. धनुर्या

२४. सप्तमिषा

२५. पूर्वभाद्र

२६. उत्तरभाद्र

२७. ऐवती

विष्णु आर्द्र दे तस स नु पो ह्न कत
 या स नु पो स क ता डा वी ये जोग
 भाग १०० स हि भाग काये १ द्वी
 ताने लब्ध वी गु जोग नो स वा की
 गुली चोय १०० स ह्वा त या से व क
 ते पाये जोग भक्ति २० गु र्दे रु
 त स म य पं द ता डा वी ये शु क
 भाग काये द्वा रि पा ला जोगे त य प
 शु गु जोग उपाये १
 भद्रा जपाये १० भुक्ते पक्ष पा नु सी
 पा या दो त या चो बुई य त या सो ठ
 पाये चो ठी धा यो ता डा वी ये न से म
 ग का ये लब्ध वी गु ला चो ठी या
 धा हि क तो पा ये क ते यो ये म जी व
 सा नु र ती पा या यौ त नो वी ये नु ती
 पा या दो व की री चो से क ते या य

... कते ला

अविष्णु दे तस स नु पो ह्न कत
 न ई क ते स चो प स प्र पी या नो इ यो द
 स प्री या नो उ धे च गु र्दे ली या नो इ यो
 स द स पक्षे या भद्रा जपाये १ द्वी ती
 या या चो त या चो गु द त या
 धी ती या या धा वि द्य ते या ये न
 से भाग काय ले च वी गु र ती
 नु ती या या यो त या लब्ध वी गु
 ती क ते या ये स प्र या इ यो द स
 प्री त र्थ च नु द सि मी नो उ वी
 अस्मिन् अस्मिन् यो जोग म जी दि स क ल
 मु स म हि स न न स म ध
 स्व लि श्री मे इ त त म जी क
 १०० य १११४७
 १०० य ४४११३

श्री ० श्री गणेशाय नमः

या क्रान्ते कृतयया ये बहु सत्सप
द्वै २३५६ केन्दु उनेया क्रान्
रेया ये केन्दु भोग्यनिब्रुवा स्वयामे
भ्रवन्नां तु तपकोपचो उभोग्यनि
या चोयवो गुलिक तया ये चाययो
भोग्यत्वं ता ननु ताने केन्दु तत्सप
तया छ रिपाला ननु ताने प्रा
लोयाये छ उ च नु भोग्यत्वं तया य
उ लव ॥ ॥ ॥

तीर्थीज्या ये वेवल च नु प्रोत्सक
तया लु यं पोत्सकं कटे प्राये ॥
तीर्थीभागं गु यी र्थे भागकाये
१ द्वीताने द्रोववा करि गुली
बोयगु ईये २० तया सो धेयाये
६० धालिगु न याये नीथी भुक्ती
६३ च यस्व तया भोग्यत्वं दाता

सम्बन्धो ग दीर्घ

ताने छ कर्त्तु भागका ये छारि नीथी
धी तप ६० वल्ली गु न या ये भुक्ती
भागका ये पाला यो दावदु छ उ
तीर्थीज्या यं गु धालि ६ वटि
नक्षे न आं ये वल स च नु पोत्सक
तया नक्षे न भाग १०० सद्धि भाग
काये १ द्वीताने ध्वन भव स वका
कीचो ये १०० सद्धि तया कते या
ये ६० धालि गु न या ये पाला छारि
या ये नक्षे न भुक्ती २० गु ई यत्स
या भोग्यत्वं दाता ने छ की भागका
ये नक्षे न तये वल्ली गु न या ये
भुक्ती भागका ये छ उ नीथी न ज
जं गु धालि ४ वटि ॥

स्वोपंचत्री सत् ढी के सत पंच
५ त्री सत् ३ ढी के १ सद्दी

बो सुई इनी ताने वी क्रम सम्य

॥ ३ ॥
॥ ३ ॥
॥ ३ ॥

ने पाली सम्वत् ज्योपे वेल सार्के
सम्बत् तया यमा भुनाती सदि
ती प्रछायी यम २ अम ० नाग

६ व्यास लन संकोका ये ने पा

ली सम्वत् ३ यी

चन्द्र ध्रुवा ज्योपे वेल के नु कुवा
तया भव यका ९ ११ सदि ३ १०
प्रापे ह कन सत्ति ३ नया ये पावा
सा ९ पाये ह कन प्रछुने ज चन्द

पु सुने ज चन्द पु सुने ज चन्द ११ ५

नी भाग का ये ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

2127

ॐ सप्तविंश

॥१॥

समाधि

विद्वत्

मद्र

सप्तमः

मणिगा

पं-स्वा-द-या

अथ गङ्गा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ विरल नूतन ॥

五

ॐ सुखात्

अ. क. वि. स. क. २२८

सारा भवतु ५३५

चन्द्राभिचन्द्रा

सप्तमिनाम्

२२७	११५४	४१२२	२४५	२	४
२२८	११५४	४१२३	२४७	२	४
२२९	११५५	४१२४	२४८	२	५
२३०	११५५	४१२५	२४९	२	५
२३१	११५५	४१२६	२५०	२	५
२३२	११५७	४१२८	२५१	२	५
२३३	११५७	४१२९	२५२	२	७
२३४	११५८	४१३०	२५३	२	७
२३५	११५८	४१३१	२५४	२	७
२३६	११५८	४१३२	२५५	२	८
२३७	११५८	४१३३	२५५	२	८
२३८	११५८	४१३४	२५५	२	८
२३९	११५८	४१३५	२५५	२	८
२४०	११५८	४१३६	२५६	२	८
२४१	११५८	४१३७	२५६	२	८
२४२	११५८	४१३८	२५६	२	८
२४३	११५८	४१३९	२५७	२	८
२४४	११५८	४१४०	२५७	२	८
२४५	११५८	४१४१	२५७	२	८

४१४५	२५५	२१९३	५१८
४१४५	२५५	२१९४	५१८
४१४७	२५७	२१९६	५१९०
४१४८	२५८	२१९५	५१९१
४१५०	२६०	२१९५	५१९२
४१५१	२६०	२१९६	५१९४
४१५२	२६१	२१९५	५१९५
४१५३	२६२	२१९६	५१९६
४१५४	२६३	२१९७	५१९७
४१५५	२६४	२१९७	५१९८
४१५६	२६४	२१९८	५१२०
४१५७	२६५	२१९८	५१२१
४१५८	२६५	२१९८	५१२२
४१५९	२६७	२१९८	५१२३
४१६०	२६८	२१९८	५१२४
४१६१	२६८	२१२०	५१२५
४१६२	२६९	२१२१	५१२७
४१६३	२६९	२१२१	५१२८
४१६४	२६९	२१२२	५१२९

५२५

५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

११० १।२५ ३।२० १८८
 १११ १।२५ ३।२५ १८९
 ११२ १।२५ ३।३० १९०
 ११३ १।२५ ३।३५ १९१
 ११४ १।२५ ३।४० १९२
 ११५ १।२५ ३।४५ १९३
 ११६ १।२५ ३।५० १९४
 ११७ १।२५ ३।५५ १९५
 ११८ १।२५ ३।६० १९६
 ११९ १।२५ ३।६५ १९७
 १२० १।२५ ३।७० १९८
 १२१ १।२५ ३।७५ १९९
 १२२ १।२५ ३।८० २००
 १२३ १।२५ ३।८५ २०१
 १२४ १।२५ ३।९० २०२
 १२५ १।२५ ३।९५ २०३
 १२६ १।२५ ३।१० २०४
 १२७ १।२५ ३।१५ २०५
 १२८ १।२५ ३।२० २०६
 १२९ १।२५ ३।२५ २०७

१।३५	२।३५	३।३५	४।३५	५।३५	६।३५	७।३५	८।३५	९।३५	१०।३५	११।३५	१२।३५	१३।३५	१४।३५	१५।३५	१६।३५	१७।३५	१८।३५	१९।३५	२०।३५	२१।३५	२२।३५	२३।३५	२४।३५	२५।३५	२६।३५	२७।३५	२८।३५	२९।३५	३०।३५
१।३५	२।३५	३।३५	४।३५	५।३५	६।३५	७।३५	८।३५	९।३५	१०।३५	११।३५	१२।३५	१३।३५	१४।३५	१५।३५	१६।३५	१७।३५	१८।३५	१९।३५	२०।३५	२१।३५	२२।३५	२३।३५	२४।३५	२५।३५	२६।३५	२७।३५	२८।३५	२९।३५	३०।३५

२०८
२०८
२१०
२११
२१२
२१३
२१४
२१५
२१५
२१७
२१८
२२०
२२१
२२२
२२३
२२४
२२५

[illegible]

2142	2170	2172	2173	2174	2175	2176	2177	2178	2179	2180	2181	2182	2183	2184	2185	2186	2187	2188	2189	2190	2191	2192	2193	2194	2195	2196	2197	2198	2199
------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------

21. 22. 11. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30.

12. 30

[illegible]

१५१ १११५ ३११
 १५३ १११५ ३११
 १५३ १११५ ३१३
 १५६ १११० ३१०
 १५५ १११५ ३१५
 १५५ १११६ ३११
 १५७ १११८ ३१८
 १५८ १११८ ३१८
 १५९ ११२० ३१८
 १६० ११२१ ३१८
 १६१ ११२१ ३१८
 १६३ ११२१ ३१८
 १६४ ११२२ ३१८
 १६४ ११२२ ३१८
 १६५ ११२२ ३१८
 १६६ ११२२ ३१८
 १६७ ११२२ ३१८
 १६८ ११२२ ३१८
 १६९ ११२२ ३१८
 १७० ११२२ ३१८

• • • • •

94425
980824

| | | | | |
|----|-----|-----|-----|----------|
| ११ | १३३ | ११६ | २३३ | न सोमसो |
| १२ | १३४ | ११७ | २३४ | सोनासद |
| १३ | १३५ | ११८ | २३५ | इतेकाभ |
| १४ | १३६ | ११९ | २३६ | सिस्तुमय |
| १५ | १३७ | १२० | २३७ | कामसोना |
| १६ | १३८ | १२१ | २३८ | अनकन |
| १७ | १३९ | १२२ | २३९ | अनाविद |
| १८ | १४० | १२३ | २४० | अनकेमल |
| १९ | १४१ | १२४ | २४१ | कनवायन |
| २० | १४२ | १२५ | २४२ | संस्काए |
| २१ | १४३ | १२६ | २४३ | ऐ सोमान |
| २२ | १४४ | १२७ | २४४ | सेजग |
| २३ | १४५ | १२८ | २४५ | आका |
| २४ | १४६ | १२९ | २४६ | तानेद |
| २५ | १४७ | १३० | २४७ | नाम |

पालक आयेवलस सात्रावस
यावोस्वरसुनेदीर्घं १००७ उरो
यायेनानास्त्रियुक्तान ४२ अ
नि ३ उक्तजोरयाङ्गि अस्त्रसते
रिवीमक्त ८०० व्यासर्त्त भागकोये
लधवोद्वोक्तनगेवोवत् ७ हेभा
गकायेसेसर्वाकिठलीअंगउक्त
८ सुतानेत्कननगेसेवत् ७ हे
भागकायेसेसर्वाकिठपालकउद्
मध्ववीकिज्योयवेदास सास्त्राव
मयेसर्त्त प्रतीर्घं १००० दोहोउ
रोआयेखसुनेपर्वीधयेक १० सा
द्विकरेकायेईनत्पृथक् ३० बा

तयेषसीद्विभागोसुम्पसीद्विजा
वीस २४० ६० सलवीयेभागकाये
भागकायागुबोयुवोठलीकरेया
येत्कनेसुद्विनयासर्पवसु
क्तखसुनेपर्व ५० तानेदसअया
ये १० साद्वुनेयायेचन्द्रासभागो
चन्द्र १॥ अस्त ८७ चजद्विभागका
नेचोयेजोगसिगाहाय नभचक्र
सेव ३०० ६०० इयसर्त्त भागकाये
समधोवीधुतयिवो ॥ ॥ ॥

केन्दुर्कुवाज्यायेनेलससास्त्राव
तयानद्वुतामद ११ सर्द्वीउ
नेयायेवेद ४० यीटायेइत्र
स्त्रिवेदत्रीवेद ४३ षीस्त्रभाग

ॐ नमः शिवाय ॥

दुष्सात्रादुज्जायेतससाकेसम्ना

रत्नदाससि० पहे० ख० क० १

ॐ कीर्ति कर्तये सा त्रा वृ उ य

पालक ज्या जेबेलस अस्त सते

रवी भक्त व्यासजी भाग काथा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

भाग काये अं ७ रु ६ गुं रा

आच्छेये हुकनं । हु प्रागका

श्री ज वाक्की नृपाल क ॥

स्मृतिज्ञायेबलम अस्मास मे

वीभक्त्याङ्गलयाशेषवार्त्त

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गोत्रं रक्षति ॥

रवीर्कुवा ज्ञायिने लस शुद्धिनाय

गङ्गा-कोट-साद-स-१०८ भागका ये

॥ कनकः ॥ अष्टांगनीयाये ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

॥ गङ्गा प्रभातः । सुप्रभातः । सुप्रभातः ।

मम रव। कुवाति

राजकलित्प्रियायवत्सलसाम्बन्धम् ॥ २०८ ॥

सया ॥ नव ॥ अह ॥ इ ॥ इ ॥ इ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

किं चिद्विवा =

शिवकालिआणिबेलासकली-७

काप्रमा ४३२००० तया गत कालि